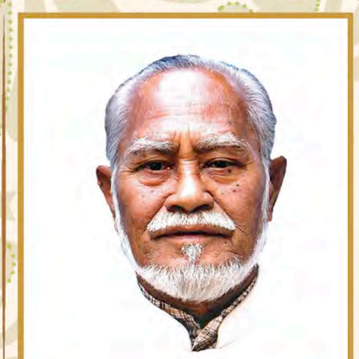

श्री हैस्नाम कन्हाईलाल

Shri Heisnam Kanhailal



पद्म भूषण

Padma Bhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्री हैस्नाम कन्हाईलाल

श्री हैस्नाम कन्हाईलाल कला क्षेत्र मणिपुर, जो कि इम्फाल में स्थापित एक रंगशाला समूह है, के संस्थापक, निदेशक एवं नाटककार हैं। आपको व्यापक रूप से, विश्वभर में रंगशाला के क्षेत्र में एक वैकल्पिक रंगशाला–भाषा की संकल्पना संबंधी भूमिका के लिए जाना जाता है। आपका कार्य, मणिपुर की परंपरागत अभिनय कलाओं से ओत–प्रोत हैं, तथापि, इसकी सर्वव्यापी अपील ने अंतरराष्ट्रीय रंगशाला कलाकारों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

2. आपका जन्म 17 जनवरी, 1941 को हुआ। आपने वर्ष 1959 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। आपने नाट्यशाला की विद्या सीखने के लिए वर्ष 1968 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में स्वयं को नामांकित कराया। लेकिन भाषायी अड़चन के कारण आप इसे आगे न बढ़ा सके। आपने जीवनयापन के लिए कई प्रकार के कार्यों में हाथ आजमाया लेकिन रंगशाला आपका एकमात्र ध्येय रहा।

3. आपने वर्ष 1969 में अपनी पत्नी हैस्नाम साबित्री तथा अन्य सदस्यों के साथ मिलकर कलाक्षेत्र मणिपुर की नींव रखी। आपकी अगुआई में कलाक्षेत्र मणिपुर तमनालाई, पीबेट, मेमायर्स ऑव अफ्रीका, द्रौपदी तथा डाकघर आदि जैसे कुछेक सर्वोत्तम प्रायोगिक नाटकों के निर्माण में सफल सिद्ध हुआ।

4. आप, समसामायिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए रंगशाला और लोकतंत्र को मणिपुर की संस्कृति ओर परंपरा के साथ देखने में विशेष रूप से सफल रहे। आपने अंतरराष्ट्रीय रंगशाला समूहों के साथ कार्य किया और पूरे देश में अभिनेता–प्रशिक्षण कार्यशालाएं भी संचालित की हैं। आपने फोर्ड फाउण्डेशन ग्रांट, नेहरू मेमोरियल फेलोशिप तथा एमेरिटस फेलोशिप की मदद से एक नवीन अभिनेता–प्रशिक्षण विधितंत्र के प्रतिपादन पर भी कार्य किया है।

5. आपने 'थिएटर फॉर द रिचुअल ऑव सफरिंग इन 1997' तथा 'रिचुअल थिएटर इन 2013' का लेखन भी किया है। आपके उसी शीर्षक 'रिचुअल थिएटर' पर लिखे गए निबंध को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संग्रह में शामिल किया गया है। आपकी अन्य पुस्तकों में थिएटर इन थ्योरी 1900–2000 तथा थिएटर ऑव द अर्थ शामिल हैं। रूस्तम भरूच द्वारा लिखित 'थिएटर ऑव कन्हाई लालः पीबेट एंड मेमॉयर्स ऑव अफ्रीका' रंगशाला के क्षेत्र में एक जानी–मानी पुस्तक है।

6. आपको कई एक पुरस्कारों जैसे रंगशाला राज्य पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1985 मणिपुरी साहित्य परिषद से वर्ष 1997 में नाट्य रत्न संगीत नाटक अकादमी फेलो, 2011, वर्ष 2011 में पुणे तनवीर पुरस्कार, वर्ष 2011 में कमल कुमारी राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्ष 2012–13 का कालीदास सम्मान, महिन्द्रा रंगशाला उत्कृष्टता पुरस्कार, वर्ष 2015 में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार तथा वर्ष 2003 में पदम श्री से विभूषित किया गया।

Shri Heisnam Kanhailal

Shri Heisnam Kanhailal, Founder, Director and Playwright of Kalakshetra Manipur, a theatre group based in Imphal is widely recognised in the theatre circuit across the world for his role in conceptualising an alternative theatre language. His work is firmly rooted in the traditional performance arts of Manipur, yet its universal appeal has attracted international theatre practitioners.

2. Born on January 17, 1941 Shri Heisnam completed his Matriculation from the Guwahati University in 1959. He enrolled himself into the National School of Drama, New Delhi to learn theatre in 1968. But he could not pursue it further due to language barrier. He had tried different jobs for a living but theatre has been his only pursuit.

3. Shri Kanhailal founded Kalakshetra Manipur in 1969 along with his wife Heisnam Sabitri and other members. Under his leadership, Kalakshetra Manipur has been able to produce some of the best experimental plays like Tamnalai, Pebet, Memoirs of Africa, Draupadi, Dakghar etc.

4. Shri Kanhailal has specifically succeeded in looking into theatre and democracy with the culture and tradition of Manipur for a contemporary cultural expression. He has worked with international theatre groups and has also conducted actor-training workshops all over the country. He has also worked on formulation of a new actor-training methodology with the help of the Ford Foundation Grant, Nehru Memorial Fellowship and Emeritus Fellowship..

5. Shri Kanhailal has also written Theatre for the Ritual of Suffering in 1997 and Ritual Theatre in 2013. His essay on the same title Ritual Theatre is included in the internationally acclaimed anthology. His other books are Theatre in Theory: 1900-2000, and Theatre of the Earth. Theatre of Kanhailal: Pebet & Memoirs of Africa written by Rustum Bharucha, has been a widely acclaimed book on theatre.

6. Shri Kanhailal is a recipient of several awards like the State Award for Theatre, the Sangeet Natak Akademi Award 1985, Natya Ratna in 1997 from the Manipuri Sahitya Parishad, Sangeet Natak Akademi Fellow 2011, Tanveer Award of Pune in 2011, Kamal Kumari National Award in 2011, Kalidash Sanman 2012-13, Mahindra Excellence in Theatre Awards-Life Time Achievement Award in 2015 and the Padma Shri in 2003.